आचार्य श्री विमर्शसागर महाराज की पूजन

(रचयिता : श्रमण विचिन्त्यसागर संघस्थ)

स्थापना

मन भाव सजाकर ये गुरु चरणों में आये ।
गुरु रत्नत्रय धारी, हम रत्नत्रय चाहें ।
आओ तिष्ठो गुरुवर, मेरे हृदयासन पर ।
कर दो हमको पावन, अपने द्वय-पग धरकर ।
दिखलाओ हे गुरुवर, अब मुक्ति की राहें। गुरु ...

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

जल

भावों का जल भरकर, श्रद्धा भाजन लाये ।
गुरु जैसी निर्मलता पाने, मन ललचाये ॥
मिथ्यात्व असंयम का, अंधियार घना छाया ॥
अविनाशी चेतन का, नहिं रूप नजर आया ॥
में ये जनममरण, शुभभाव सजा लाये । गुरु...

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन

रागादिक भावों से, भवताप बढ़ाया है ।
स्वाभाविक शीतलता का, घात कराया है।
अर्पित गुरुवर चरणों ये, मलयागिरि चंदन।
मेंटो गुरुवर मेरा ये भव भव का क्रन्दन ।
जिसमें भवताप न हो, वो वैभव मिल जाये । गुरु...

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत

अब तलक विभावों की, परिणति में भरमाया ।
स्वातम पद पाने की, मन चाहत ले आया ।
ये पुंज धवल अर्पण, मम् भाव धवल होवें ।
पर्यायों में अपनी, आतम बुद्धि खोवें ।
सम्पूर्ण विभावों की अब, संतति नश जाये । गुरु...

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प

निष्काम आत्मा का, स्वामी हूँ हे गुरुवर ।
अब्रह्म के वश होकर, भटका हूँ मैं दर-दर ।
निज परमब्रह्म, चेतन - रस का रसपान करूँ ।
शैलेष अवस्था को, पाने मन भाव धरूँ ।
ये पुष्प तुम्हें अर्पित मम, काम विनश जाये। गुरु...

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य

निज चिदानंद - रस का, मैं पूर्ण समुन्दर हूँ।
गुरुवर अनंतबल का, मैं स्वामी अंदर हूँ।।
ये क्षुधा की बीमारी, भव-भव भटकाती है।
जितना मैं तृप्त करूँ, ये बढ़ती जाती है ।।
ये क्षुधा नशाने को, नैवेद्य चरण लाये । गुरु...

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वमापीति स्वाहा ।

दीप

मोहान्ध बना गुरुवर, पर में ही भरमाया ।
निज-पर का हे गुरुवर ! नहिं भेद समझ पाया ।
ये दीप समर्पित है, मोहान्ध नशाने को।
निज की चैतन्यमयी, परिणति प्रगटाने को ।
आशीष यही देना यह, मोह विनश जाये। गुरु...

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

जब कर्म उदय आये, मैंने राग और द्वेष किया।
कर्मों ने जो भी दिया, मैंने वैसा भेष लिया ।
कर्मों के बश होकर, भव रीति बढ़ाई है।
निष्कर्म निजातम से, न प्रीति लगाई है ।
ज्यों अनल में धूप जले, मम् कर्म भी जल जायें। गुरु...

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

फल

जब कर्म उदय आये, मैंने राग और द्वेष किया।
कर्मों ने जो भी दिया, मैंने वैसा भेष लिया ।
कर्मों के बश होकर, भव रीति बढ़ाई है।
निष्कर्म निजातम से, न प्रीति लगाई है ।
ज्यों अनल में धूप जले, मम् कर्म भी जल जायें। गुरु...

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ्य

अर्घावलियों के संग, शुभभाव चढ़ाते हैं ।
चाहत अनर्घ - पद की, नित हृदय सजाते हैं ।
स्वातम अनर्घ पद बिन, भव-भव में दुःख पाया ।
सुख पाने पद पाये, पर सुख न कहीं पाया।
अक्षय स्वातम पद का, अक्षय सुख मिले जाये । गुरु...

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

निस्पृहता की आप हो नूतन परिभाषा ।
चर्या गुरुवर आपकी बोधि की भाषा ॥
दर्शन ज्ञान चरित्र शुभ तप और वीर्याचार।
पूरी दृढ़ता से करें पालन पंचाचार ॥
मन वच तन को गुप्तकर आतम करें विहार ।
अशुभ टला, शुभ चाह न, शुद्ध का करें विचार॥
सत्य अहिंसा, शील और अपरिग्रह का हार ।
अचौर्य आदि महाव्रतों से चेतन श्रृंगार ॥
क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, तप त्याग ।
आकिन्चन संयम धरम, ब्रह्मचर्य अनुराग ॥
तरुणाई में ही लगी अच्छी संयम राह ।
विषय भोग भोगे नहीं न ही किया विवाह ॥
विषय भोग संसार से जगा विरक्ति भाव ।
गुरु "विराग" को पा लिया जैसे शीतल छाँव ॥
गुरु " विराग" में कर लिया मात-पिता का दर्श ।
छोड़ नाम " राकेश" आप, धारण किया" विमर्श " ॥

ॐ हूँ परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

॥ गुरु आशिका ॥

गुरुवर के पावन गुणों की मंगल गीता गाते हैं।
आज यहाँ गुरु पावन गुण हम गाते और सुनाते हैं ।।
गुरुवर की इस आशिका से भव के पाप नशाते हैं।
श्री गुरुवर की आशिका हम अपने शीष चढ़ाते हैं ।।

॥ गुरु मंत्र ॥

संकट मोचन तारण हारे,
गुरु विमर्श की जय जय जय